अमेरिका ने चीन पर युआन को जानबूझकर कमजोर करने का आरोप क्यों लगाया?

लेखक –प्रशान्त पेरुमल जे (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) एवं III-(भारतीय अर्थव्यवस्था) संबंधित है।

द हिन्दू

12 अगस्त, 2019

वैश्विक अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में इसके क्या मायने है?

सोमवार को, संयुक्त राज्य अमेरिका ने चीन को आधिकारिक तौर पर 'मुद्रा जोड़तोड़' या मुद्रा के साथ छेड़छाड़ (currency manipulator) करने वाले देश की संज्ञा दी है। अमेरिका की यह प्रतिक्रिया पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना (PBoC), जो चीन का केंद्रीय बैंक है, द्वारा युआन को महत्वपूर्ण CNY7 इकाई (CNY या युआन रॅन्मिन्बी की मूल इकाई है, जो चीन की आधिकारिक मुद्रा है) से कम करते हुए डॉलर के निशान के नीचे लाने के फैसले के तुरंत बाद आया। यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि युआन इससे पहले अप्रैल 2008 में डॉलर के मुकाबले इस स्तर पर था। मुद्रा के वर्तमान अवमूल्यन ने अमेरिका और चीन के बीच चल रहे व्यापार युद्ध के प्रकाश में नया आयाम दिया है; दोनों देशों ने दूसरी तरफ से अपने देशों में आयात होने वाले अरबों के सामानों पर उच्च शुल्क लगाया है।

चीन के लिए इस कदम का क्या मतलब है?

'मुद्रा जोड़ तोड़' की संज्ञा का अर्थ यह नहीं हुआ कि चीन के खिलाफ इस संदर्भ में कोई दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। लेकिन इसका उपयोग अमेरिका द्वारा चीन के खिलाफ अन्य प्रतिशोधात्मक प्रतिबंधों को सही ठहराने के लिए एक बहाने के रूप में किया जा सकता है। अमेरिका चीन को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) में भी घसीट सकता है, हालांकि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास चीन को दंडित करने के लिए कोई हथियार है नहीं।

अमेरिका ने यह रुख क्यों अपनाया है?

अमेरिका का मानना है कि चीन जानबूझकर अपनी मुद्रा (युआन) को कमजोर कर रहा है ताकि अमेरिका में निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके। ट्रम्प प्रशासन, जो पिछले साल की शुरुआत से ही उच्च टैरिफ लगाकर अमेरिकी सामानों के चीनी आयात को हतोत्साहित करने की कोशिश कर रहा है, का मानना है कि चीनी सामानों की बढ़ोतरी से स्थानीय अमेरिकी निर्माताओं के कारोबार पर असर पड़ेगा। हांलाकि, चीन को जो एक 'मुद्रा जोड़तोड़' की संज्ञा दी गयी है वह काफी हद तक प्रतीकात्मक है, यह केवल एक संकेत मात्र है कि यू.एस. और चीन के बीच आर्थिक संबंध और खराब होने के लिए तैयार हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करके अपनी मुद्रा की विनिमय दर पर अधिक प्रत्यक्ष नियंत्रण करता है। उदाहरण के लिए, यू.एस. फेडरल रिजर्व जैसे अन्य केंद्रीय बैंक आम तौर पर सामान्य मौद्रिक नीति उपकरण का उपयोग करते हैं, जिसका उपयोग वे अपनी मुद्राओं की विनिमय दर को कमजोर या मजबूत करने के लिए, समग्र अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को विनियमित करने के लिए उपयोग करते हैं।

हालांकि, यू.एस. ने चीन पर युआन को जानबूझकर कमजोर करने का आरोप लगाया है, लेकिन कई विश्लेषकों का मानना है कि ऐसा हो सकता है कि पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना ने अतीत में विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करते हुए डॉलर के मुकाबले मुद्रा को कमजोर कर के जानबूझकर यूआन को बेचने की कोशिश की हो, लेकिन अब स्थिति ऐसी नहीं है। इसके बजाय, वे मानते हैं कि पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना आज, वास्तव में, विदेशी मुद्रा बाजार में डॉलर की बिक्री कर सकता है ताकि डॉलर के मुकाबले युआन के मूल्य को बढ़ाया जा सके क्योंकि बाजार युआन को नीचे धकेलने की कोशिश करता रहता है।

आखिर क्या कारण है कि चीन युआन को डॉलर के मुकाबले कमजोर क्यों होने दे रहा है?

मुद्रा का अवमूल्यन करना अर्थव्यवस्थाओं द्वारा नियोजित एक आम चाल है जो अपनी वस्तु की मांग को बढ़ाने में मदद् करने के लिए मंदी का सामना करती है। विदेशी मुद्रा बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने के लिए केंद्रीय बैंक का उपयोग करके एक मुद्रा का अवमूल्यन (या कमजोर) किया जाता है। यह मुद्रा की अधिक इकाइयों को विभिन्न अन्य विदेशी मुद्राओं की कम इकाइयों का उपयोग करके खरीदा जा सकता है। युआन के मामले में, इसकी आपूर्ति में वृद्धि से इसकी अधिक इकाइयों को कम अमेरिकी डॉलर के बदले खरीदा जा सकेगा। यह चीनी सामानों को स्थानीय चीनी के हाथों से और अमेरिकियों के हाथों से खरीदने के लिए क्रय शक्ति के अधिक हस्तांतरण का एक तरीका है।

चीनियों का मानना है कि इससे चीन के निर्यात के मूल्य को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी और विकास भी शुरू होगा। चूंकि चीनी अर्थव्यवस्था जुलाई में 27 साल के 6.2% की गिरावट के साथ सामान्य मंदी का गवाह रही है, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चीन ने अपने वस्तुओं की मांग को बढ़ाने के लिए निर्यात पर अधिक निर्भर रहने का फैसला किया है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए इसका क्या मतलब है?

यदि अमेरिका चीन के युआन अवमूल्यन के खिलाफ प्रतिशोध लेने के लिए डॉलर को कमजोर करता है, तो इसके साथ एक मुद्रा युद्ध की शुरुआत होने की संभावना बढ़ जाती है। अमेरिकी राष्ट्रपति, डोनाल्ड ट्रम्प ने, गुरुवार को, वास्तव में अपनी तंग मौद्रिक नीति के साथ डॉलर को बहुत मजबूत रखने के लिए अमेरिकी फेड को दोषी ठहराते हुए एक कमजोर डॉलर की अपनी इच्छा का संकेत दिया है। आखिरी बार जब पूरी दुनिया मुद्रा युद्ध में लगी हुई थी, तो 1930 के दशक की महामंदी के दौरान, जब घरेलू मंदी का सामना कर रहे देशों ने अपनी मुद्राओं को प्रतिशोधी अंदाज में भुनाकर अपनी अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देने की कोशिश की थी। इससे व्यवसायों के लिए भयानक अनिश्चितता पैदा हो गई। उच्च टैरिफ के साथ, इसके कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में गिरावट आई।

आज भी एक मुद्रा युद्ध का इसी प्रकार का समान प्रभाव पड़ेगा। मुद्रा अवमूल्यन भी उच्च टैरिफ के किसी भी नकारात्मक प्रभाव को पूर्ववत् नहीं करेगा जो पहले ही अमेरिकी और चीनी प्रशासन द्वारा एक दुसरे पर लगाया जा रहा हैं। टैरिफ, जो वास्तव में किसी अन्य नाम से लगाये जा रहे हैं, बने रहेंगे और उत्पादन को हतोत्साहित करेंगे। मुद्रा अवमूल्यन से विदेशी लोगों के हाथों में अधिक क्रय शक्ति स्थानांतरित करके निर्यात को अस्थायी रूप से बढ़ावा मिल सकता है, लेकिन यह घरेलू उत्पादन को बढ़ावा नहीं देगा। आखिरकार, अतीत की तरह ही इस तरह का प्रतिस्पर्धी अवमूल्यन वैश्विक व्यापार के आकार को कम करने का कारण बन सकता हैं।

GS World टीम...

अमेरिका-चीन करेंसी वार

चर्चा में क्यों?

- अमेरिका ने चीन को आधिकारिक तौर पर मुद्रा के साथ छेड़छाड़ करने वाला देश (करेंसी मैनिपुलेटर) घोषित किया है।
- अमेरिका ने चीन पर व्यापार में 'अनुचित प्रतिस्पर्धी लाभ' लेने के लिए युआन का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है।
- युआन चीन की मुद्रा है। एक अमेरिकी डॉलर के मुकाबले युआन की वैल्यू 7 से नीचे चली गई है।
- अमेरिका के इस कदम से दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार मोर्चे पर चल रहे टकराव के बढ़ने की आशंका है।
- अमेरिका ने चीन की ओर से अपनी मुद्रा युआन को डॉलर के मुकाबले सात के स्तर से नीचे रखने की अनुमति देने के बाद यह कदम उठाया।
- विदित हो कि ट्रंप ने 2016 में राष्ट्रपति चुनावी अभियान के दौरान चीन को मुद्रा के साथ छेड़छाड़ करने वाला देश ठहराने का वादा किया था। लेकिन वित्त मंत्रालय ने यह कदम उठाने से इनकार करते हुए चीन को निगरानी सूची में डाल रखा था।

- चीन दुनिया भर में अपने यहां बने उत्पादों का निर्यात करता है. अपनी मुद्रा की वैल्यू कम बनाए रखने से उसे वैश्विक बाजार में अपने उत्पादों की कीमतें कम रखने में मदद मिलती है। यही वजह है वह अपनी मुद्रा की कीमत बढ़ने नहीं देता है।

मुद्रा अवमूल्यन क्या है?

- अन्य मुद्राओं के संबंध में अवमूल्यन एक मुद्रा मूल्य में कमी है। यह किसी अन्य मुद्रा, मुद्राओं के समूह या मानक के सापेक्ष किसी देश की मुद्रा के मूल्य का एक जानबूझकर नीचे की ओर समायोजन है।
- अवमूल्यन मुद्रा के संदर्भ में बढ़ती कीमतों से देश में आयात की घरेलू मांग को कम करने और विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में अपने मूल्यों को कम करके देश के निर्यात के लिए विदेशी मांग को बढ़ाने का प्रयास करता है।
- इसलिए अवमूल्यन से भुगतान की कमी के संतुलन को ठीक करने में मदद मिल सकती है और कभी-कभी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के आर्थिक समायोजन के लिए अल्पकालिक आधार प्रदान करता है।

करेंसी वार या मुद्रा युद्ध क्या है?

- विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपने निर्यात को बढ़ाने के लिये जानबूझकर अपनी मुद्राओं के मूल्य में कमी करना ही करेंसी वार कहलाता है।
- इस परिघटना को 'प्रतिस्पर्द्धी अवमूल्यन' (Competitive Devaluation) के रूप में भी जाना जाता है।
- इस प्रतिस्पर्द्धी अवमूल्यन की वजह से विदेशी विनिमय की परिवर्तनशीलता नाटकीय ढंग से होती है, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश में एकाएक वृद्धि और गिरावट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- विदेशी निवेशकों द्वारा बाजार से धन निकालने पर अर्थव्यवस्था में पूंजी प्रवाह का आकार सिकुड़ जाता है, जिसकी परिणति अर्थव्यवस्था पर अवस्फीतिकारी दबाव (deflationary pressure) के रूप में हो सकती है।
- वर्तमान में हम लोग करेंसी वार के तीसरे दौर में प्रवेश कर चुके हैं। इससे पहले दो करेंसी वार हो चुके हैं।
- पहला- यह 1921 से 1936 तक चला। प्रथम विश्व युद्ध से उपजी परिस्थितियों ने ब्रिटेन, फ्राँस, जर्मनी एवं अमेरिका जैसे देशों को अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करने के लिये बाध्य किया जिसकी परिणति अनियंत्रित महँगाई अथवा मुद्रास्फीति के रूप में सामने आई।
- दूसरा- 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति ने विदेशी केंद्रीय बैंकों द्वारा डॉलर की स्वर्ण में परिवर्तनीयता पर रोक लगा दी तथा सभी आयातों पर 10% का अतिरिक्त अधिभार आरोपित कर दिया।

इसके कारण उत्पन्न समस्याएँ

- करेंसी वार से विभिन्न देशों के बीच डंपिंग तथा आयात शुल्कों एवं काउंटर वेलिंग शुल्कों में वृद्धि हुई है।
- जिन देशों के पास सीमित मात्रा में संसाधन होते हैं, वे मजबूत निर्यात प्रधान अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर हो जाते हैं।
- ऐसे में इन देशों की कमजोर मुद्रा आयात लागत को बढ़ा देती है, वहीं मुद्रा को कमजोर बनाए रखना भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि इसकी वजह से बाजार में तरलता बढ़ने से मुद्रास्फीति भी बढ़ जाती है।

विनिमय दर?

- विनिमय दर का अर्थ दो अलग अलग मुद्राओं की सापेक्ष कीमत है, अर्थात " एक मुद्रा के सापेक्ष दूसरी मुद्रा का मूल्य"।
- वह बाजार जिसमें विभिन्न देशों की मुद्राओं का विनिमय होता है उसे विदेशी मुद्रा बाजार कहा जाता हैद्य

विनिमय दर तीन प्रकार के होते हैं:

1. अस्थायी विनिमय दर (Floating Exchange Rate)
2. स्थिर विनिमय दर (Fixed Exchange Rate)
3. प्रबंधित विनिमय दर (Managed Exchange Rate)

- **अस्थाई विनिमय दर:** यह विनिमय दर की वह प्रणाली है जिसमें एक मुद्रा के मूल्य को स्वतंत्र रूप से निर्धारित होने की अनुमति होती है या मुद्रा के मूल्य को किसी मुद्रा की मांग और आपूर्ति के आधार पर निर्धारित किया जाता है, अस्थाई विनिमय दर कहलाती है।
- **स्थिर विनिमय दर:** विनिमय दर की वह प्रणाली जिसमें विनिमय दर मांग और आपूर्ति के आधार पर नहीं बल्कि सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है उसे स्थिर विनिमय दर कहते हैं।
- **प्रबंधित विनिमय दर:** यह विनिमय दर की वह प्रणाली है जिसमें सरकार द्वारा विनिमय दर में 1 से 3 प्रतिशत की उतार-चढ़ाव की अनुमति दी जाती है उसे प्रबंधित विनिमय दर कहते हैंद्य इस प्रणाली में विनिमय दर न तो स्थिर होता है और न ही स्वतंत्र होता है। इस विनिमय दर के निर्धारण में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का पूरा दखल होता है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपने निर्यात को बढ़ाने के लिए जानबूझकर अपनी मुद्राओं के मूल्य में कमी करना ही 'करेंसी वार' कहलाता है।
2. एक मुद्रा के सापेक्ष दूसरी मुद्रा का मूल्य, विनियम दर कहलाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements-

1. Deliberately devaluating the value of its currency to increase import by various economies is called 'Currency war'.
2. The relative value of one currency to other is called exchange rate.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः हाल ही में जानबूझ कर चीन द्वारा अपनी मुद्रा में किया गया अवमूल्यन का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Q. Discuss the effects on global economy due to the devaluation of its currency by China.
(250 Words)

नोट : 10 अगस्त को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।

Committed